International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 2; Issue 5; September 2017; Page No. 786-787

उपन्यासकार प्रेमचंद का गोदान

Renu
B.Ed teacher, GGSSS Sindhvi Khera, Jind, Haryana, India

सारांष
गोदान मुंषी प्रेमचंद की सर्वोतम कृति है जिसमें किसानो का संपूर्ण जीवन उकेरा गया है । गोदान किसानो पर हाने वाले ष्षोषण की गाथा है। इसका नायक एक किसान है जो जीवन भर संघर्ष की चक्की में पिसता है। यह मात्र कहानी नहीं है यह उस समय के समाज की एक ज्वलन्त समस्या थी। इस उपन्यास में कृषक समाज का यथार्थ चित्रण हुआ है जिनका जीवन दुखो से भरपूर था। जीवन भर संघर्ष औश्र परिश्रम करने के ष्च्चात् भी गाय की अपनी आकांक्षा पूर्ति करने में संभव न हो सका।

मूल शब्द: अद्वितीय, ष्षोषण, ज्वलन्त, संघर्ष।

परिचय
हिन्दी में मौलिक उपन्यासकारों की श्रेणी में प्रेमचंद अग्रणी स्थान पर खड़े होते है। उन्होने ही सर्वप्रथम उपन्यास साहित्य में विद्यमान रिक्तता को भरने का बीड़ा उठाया । उन्हे अगर उपन्यास सम्राट के पद पर विभूषित किया जाए तो उसमें कोई संदेह नही होगा। उनकी लेखनी ने जन सामान्य की पीड़ा और दुखो को वाणी दी है। इससे पूर्व साहित्य का उद्देष्य मात्र मनोरंजन करना था परंतु मुंषी प्रेमचंद ने उसे एक नई दिषा प्रदान किया । भारतीय किसानो के दुखदायी जीवन में तथा मध्य वर्गीय समाज में विद्यमान पीड़ा उनके उपन्यासो में जीवंत हो उठा है । तत्कालीन भारतीय समाज के कष्टदायी जीवन को उनकी लेखनी ने बखूबी उभारा है। राजा हो या रंक कोई भी उनकी नजरों से बच नही पाया है। समाज के सभी वर्गो का सजीव चित्र उपस्थित करना उनकी विषेषता है। उनके उपन्यासे में कथोवकथन, ष्षैली, वातावरण तथा उद्देष्य सभी औपन्यासिक तत्वों को अद्वितीय रूप से विकसित किया गया है। आचार्य हजारी प्रसाद मानवतावादी कलाकार प्रेमचंद के महत्व को इन षब्दो में व्यक्त करते है–प्रेमचंद ष्षताब्दियों से पददलित अपमानित और उपेक्षित कृषकों की अवाज थे पर्दे में कैद पद–पद पर लांछित और असहाय नारी जाति की महिमा के जबरदस्त वकील थे, गरीबों और बेकारो के महत्व के प्रचारक थे। अगर आप उत्तर भारत की समस्त जनता के आचार–विचार भाषा भाव रहन–सहन आषा आकांक्षा दुख और सूझ–बूझ जानना चाहते है तो प्रेमचंद से उत्तम परिचायक आपको नहीं मिल सकता। झोपड़ियों से लेकर महलों, खोमचे वाले से लेकर, गांव से लेकर घारा–सभाओं तक आपको इतने कौषलपूर्वक और प्रामाणिक भाव से कोई नहीं ले जा सकता है।

गोदान को प्रेमचंद का अंतिम और सबसे महत्वपूर्ण उपन्यास माना जाता है। कुछ लोग इसे उनकी सर्वोत्तम कृति भी मानते हैं। इसका प्रकाषन 1936 ईं में हिन्दी ग्रंथ रचनाकार कार्यालाप, बंबई द्वारा किया गया था। इसमें भरतीय ग्राम समाज एवं परिवेष का वजीव चित्रण है। योगदान ग्राम जीवन और कृषि संस्कृति का महाकाव्य है। इसमें प्रगतिवाद गांधीवाद और मार्क्सवाद का पूर्ण परिप्रेक्षय में चित्रण हुआ है।

गोदान हिन्दी के उपन्यास–साहित्य के विकास का उज्जवल प्रकाष स्तंभ है। गोदान के नायक और नायिका होरी और धनिया के परिवार के रूप में हम भारत की एक विषेष संस्कृति को सजीव और साकार पाते है। ऐसी संस्कृति जो अब समाप्त हो रही है या हो जाने को है फिर भी जिसमें भारत की मिट्टी की सोंधी खुषबू भरी है। प्रेमचंद ने इसे इसे अमर बना दिया है। गोदान प्रेमचंद का हिंदी उपन्यास है जिसके उनकी कला अपने चर्म उत्कर्ष पर पहुंची है। गोदान में भारतीय किसान की संपूर्ण जीवन उसकी आकांक्षा और निराषा, उसकी बेबसी और निरीहता का जीता जागता चित्र उपस्थित किया गया है। उसकी गर्दन जिस पैर के नीचे दबी है उसे सहलाता कलेष और वेदना को झुठलाता, मरजाद की झेठी भावना पर गर्व करता ऋणग्रस्ता के अभिषाप में पिसता तिले–तिल ष्षूलों भरे पथ पर आगे बढ़ता भारतीय समाज का मेरूदंड यह किसान कितना षिथिल और जर्जर हो चुका है। यह गोदान में प्रत्यक्ष देखने को मिलता है। नगरों के कोलाहलमय चकाचौंध ने गावों की विभूति को कैसे ढक दिया है, जमीदार मिल मालिक, पत्रसंपादक अध्यापक पेषेवर वकील डॉक्टर, राजनीतिक नेता और राजकर्मचारी जोंक बने कैसे गांव के इस निरीह किसान का षोषण कर रहे है और कैसे गांव के ही महाजन अैर पुरोहित उनकी सहायता कर रहे है गोदान में ये सभी तत्व नखदर्पण के समान प्रत्यक्ष हो गए है। गोदान वास्तव में 20वी ष्षताब्दी की तीसरी और चौथी दषाब्दियो के भारत का ऐसा सजीव चित्र है, जिसे हमें अंयत्र मिलना दुर्लभ है।

गोदान में बहुत सी बाते कही गई है। जान पड़ता है प्रेमचंद ने अपने सम्पूर्ण जीवन के व्यंग और आदर्ष सभी को और विनोद, कसक और वेदना, विद्रोह और वैराग्य, अनुभव सभी को अपने इसी उपन्यास में भर देना चाहा है। कुछ आलोचकों को इसी कारण उसमें अस्तव्यस्तता मिलती है। उसका कथानक षिथिल, अनियंत्रित और स्थान–स्थान पर अति नाटकीय जान पड़ता है। ऊपर से देखने पर है भी ऐसा ही, परन्तु सूक्ष्म रूप से देखने पर गोदान में लेखक का अद्भूत उपन्यास–कौषल दिखाई पड़ेगा क्योंकि उन्होने जितनी बातें कही है वे सभी समुचित उठान में कही गई है वे सभी समुचित उठान में कही गई है। प्रेमचंद ने एक स्थान पर लिखा है–उपन्यासो में आपकी कलम में जितनी ष्षक्ति हो अपना जोर दिखाई, राजनिति पर तर्क किजिए, किसी महफिल के वर्णन में उपस्थित कर देना प्रेमचंद का अपना विषेष कौषल है और इस दृष्टि से उनकी तुलना में ष्षायद ही किसी उपन्यास लेखक को

रखा जा सकता है।

जिस समय प्रेमचंद का जन्म हुआ वह युग सामाजिक–धर्मिक रूढ़िवाद से भरा हुआ था। इस रूढिवाद से स्वयं प्रेमचंद भी प्रभावित हुए। जब आपने कथा साहित्य का सफर ष्षुरू किया अनेकों प्रकार के ग्रस्त समाज को यथाषक्ति कला के ष्षस्त्र द्वारा मुक्त कराने का संकल्प किया। अपनी कहानी के बालक के माध्यम से यह घोषणा करते हुए कहा कि ''मैं निरर्थक रूढियो और व्यर्थ के बंधनो का दास नही हूं।

प्रेमचंद और ष्षोषण का रिष्ता बहुत पुराना माना जा सकता है क्योकि बचपन से ही ष्षोषण के षिकार रहे प्रेमचंद इससे अच्छी तरह से वाकिफ हो गए थे। समाज में सदा वर्गवाद व्याप्त रहा है। समाज में रहने वाले हर व्यक्ति को किसी न किसी वर्ग से जुड़ना ही होगा।

प्रेमचंद ने वर्गवाद के खिलाफ लिखने के लिए ही सरकारी पद से त्यागपत्र दे दिया। वह इससे संबधित बातों को उन्मुख होकर लिखना चाहते थे। उनके मुताबिक वर्तमान युग न तो धर्म का है और न ही मोक्ष का। अर्थ ही इसका प्राण बनता जा रहा है। आवष्यकता के अनुसार अर्थोपार्जन सबके लिए अनिवार्य होता जा रहा है।

उपन्यास वे ही उच्च कोटि के समझे जाते है जिसमें आदर्ष तथा यथार्थ का पूर्ण सामंजस्य हो। गोदान में समांतर रूप से चलने वाली दो कथाएं है–एक ग्राम्य कथा और दूसरी नागरिक कथा, लेकिन इन दोनो कथाओं में परस्पर संबद्धता तथा संतुलन पाया जाता है। ये दोनों कथाएं इस उपन्यास की दुर्बलता नहीं, वरन सषक्त विषेषता है।यदि हमें तत्कालीन समय के भारत वर्ष को समझाना है तो हमें निष्चित रूप से गोदान को पढ़ना चाहिए इसमें देष–काल की परिस्थितियो का स्टीक वर्णन किया गया है। कथा नायक होरी की वेदना पाठको के मन में गहरी संवेदना भर देती है। परंतु गोदान की इच्छा उसे जीवित रखती है और वह यह इच्छा मन में लिए ही इस दुनिया से कूच कर जाता है।

गोदान औपनिवेषिक ष्षासन के अंतर्गत किसान का महाजनी व्यवस्था में चलने वाले निरंतर ष्षोषण तथा उससे उत्पन्न संत्रास की कथा है। गोदान का नायक होरी एक किसान है।''अजीवन दुघष संघर्ष के बावजूद उसकी एक गाय की आकांक्षा पूर्ण नही हो पाती। गोदान भारतीय कृषक जीवन के संत्रामय संधर्ष की कहानी है। गोदान होरी की कहानी है उस होरी की जो जीवन भर मेहनत करता है अनेक कष्ट सहता है, केवल इसलिए की उसकी मर्यादा की रक्षा हो सके और इसलिए वह दूसरों को प्रसन्न रखने का प्रयास भी करता है किंतु उसे इसका फल भी नहीं मिलता और अन्त में उसे मजबूर होना पड़ता है। फिर भी अपनी मर्यादा नहीं बचा पाता। परिणामतः वह जब तप के अपने जीवन को ही होम कर देता है। यह होरी की कहानी नहीं उस काल भारतीय किसान की आत्मकथा है और उसके साथ जुड़ी है ष्षहर की प्रासंगिक कहानी। गोदान में उन्होने ग्राम व ष्षहर की दो कथाओं को यथार्थ रू‍ व संतुलित मिश्रण प्रस्तुत किया है। दोनो कथाओं का संगठन इतनी कुषलता से हुआ है कि उसमें प्रवाह आद्योघांत बना रहा है। प्रेमचंद की कलम की यही विषेषता है।

इस रचना में प्रेमचंद का गांधीवाद से मोहभंग साफ–साफ दिखाई पड़ता है। प्रेमचंद के पूव उपन्यासो में जहां आदर्षवाद दिखाई पड़ता है, गोदान में आकर यर्थाथवाद नग्न रूाप में परिलक्षित होता है। कई समालोचको ने इसे महाकाव्य उपन्यास का दर्जा भी दिया है।

संदर्भ ग्रंथः–

1. प्रेमचंद गोदान, राजकमल प्रकाषन
2. मिश्र षिव कुमार–प्रेमचंद की विरासत और गोदान लोक भारती प्रकाषन इलाहाबाद 2011
3. राय गोपाल, गोदान, नया परिप्रेक्ष्य, अनुपम प्रकाषन पटना 1982
4. अरोड़ा रामस्वरूप प्रेमचन्दोत्तर उपन्यासो में सांस्कृतिक मूल्यों का विघटन, दिल्ली निर्माण प्रकाषन 1986
5. कौषिक, हेमराज, मूल्य हिन्दी उपन्यास, दिल्ली नीतिका प्रकाषन 2000 ई0
6. प्रगतिषील चिंतन और हिंदी उपन्यास साहित्य नागार्जुन